



तिं कथं व्यतिवदनं दानं कुरु ॥ १ ॥ हो गा दो व
 द्ययद्वी लज्जत ग दाय तिं न क व मुं ग नार्ग ॥ २ ॥ नति
 आ ला मन सा संपू ज्ञ ज वे त ॥ ३ ॥ नति स नु न ज वं
 नि वे द्यो व न व जं ग क ल ॥ वि से ज त ॥ वि द ति क ॥ ४ ॥
 च उ द्द ल ॥ न क द ल ॥ म ग म ॥ द ग द ल ॥ वि न ॥ ५ ॥

१५१

दं व न ॥ व र्ण गु न ॥ य किं दू ज य ॥ क उ द न ॥ ति व र्ण
 ज ॥ य न्दु र्ण ॥ म ॥ ग दाय तिं संपू ज्ञ ॥ ६ ॥ को व
 पू ज्ञ ॥ ७ ॥ म न स ति संपू ज्ञ ॥ ८ ॥ दि गी म म ह म न
 स ति संपू ज्ञ ॥ ९ ॥ ए ती म म ह लं व द न्नी संपू ज्ञ ॥ १० ॥
 प्र थ मा व न ॥ ११ ॥ त स्य पू र्वा दि क उ दि क्षा ॥ १२ ॥ ग दाय ति

यतयेनमः॥ॐ जहाजनाय॥ॐ जहाजनाय॥
गहक्रीयनमः॥ॐ त्रिदितीयावनदी॥किस्मिन्
वर्जं जहागुद्यद्वद्वत्॥ॐ वक्रउद्ययनमः॥
कदनीयनमः॥ॐ मेहोत्राय॥ॐ जाननाय॥
कादनीय॥ॐ विकदय॥ॐ विद्युत्तय॥ॐ धू

मुवक्षीयनमः॥ॐ त्रिदितीयावनदी॥ॐ जहाजनाय॥
ॐ जगन्नाथ॥ॐ यमाय॥ॐ नेमलाय॥ॐ वनूलाय॥
ॐ वायव्य॥ॐ साताय॥ॐ शीजनाय॥ॐ वक्रुदाय॥
जननाय॥ॐ त्रिदितीयावनदी॥ॐ वीजायनमः॥
गकम्पनमः॥ॐ दन्ताय॥ॐ स्वर्जाय॥ॐ वागाय॥

जं कं ज्ञाय ॥ ॐ गवाये ॥ ॐ त्रिंशत्साय ॥ ॐ वदन्माय ॥ ॐ
नकाय ॥ ॐ सारंगवाद्यये ॥ ॐ गवाधनाय ॥ ॐ तिवन्
मावेष्टु ॥ ॐ गजककुका विद्महे ह्रिक्काय प्रभाम
तनादन्ति वृषोदयात् ॥ ॥ विद्महे देवताय प्रिकी
हिता ॥ ॐ वीजं ॐ कान्तं किं सर्वकामा ॥ ॐ ह्रिक्काय

जये विनिमोऽहं ॥ सर्वविद्म विना ज्ञाय विनिमोऽहं
कीर्तिता ॥ नकायामादि कुर्यात्तत्सहदन्तसहजोऽपि
रूढं त्रिंशत्वाजं वीकं ॐ वीजं नदमल यदं वादुहि
ध्यानं गम्यौ ॥ ॐ श्रीं पूर्वगजास्यं वधूनज ॥ ॐ नाग
पक्षाय वीरं दवचक्राद्वा ॐ सकलल यदनं विद्म

नार्जुनमामि ॥ २१ ॥ गच्छात्तु मम निरुद्धात्तु सत्तति वा
 उज्जाननानि गृह्णन्ति मयात्तु. गच्छकद्वयं प्रतिमम ॥
 कथोत्तोगदानाथस्तु. द्यादीं गच्छेत्तु जिह्वा ॥ मूर्खं
 सुमुखं व्यात्तु. चिच्छं जिह्वा सुत्त ॥ जिह्वा व्यात्तु गच्छ
 कीर्ति. दन्तानि कवदेवत्तु। वाचं विनायकं व्यात्तु. कच्छ
 निर

वात्तु नदी कच्छ ॥ सुखं व्यात्तु गच्छ सुखं व्यात्तु मम विद्यु
 ना गच्छ ॥ सुखं नदी कच्छ ॥ नदी व्यात्तु महावत्त ॥
 द्युत्तं गच्छात्तु तिष्ठन्ति नदी वे महावत्त ॥ नदी गच्छ
 नदी द्युत्तं व्यात्तु सुत्त विद्युत्त ॥ कच्छं विद्युत्त व्या
 उ. गच्छं गच्छ कच्छ ॥ कच्छात्तु नदी नदी जान
 जि।

निर्मल आधिय ॥ जघनमयवदः पातुः सुतुल्ये म
धुः कि विप्र ॥ वदं हि न दुजमपातुः सर्वजिगि
हनायक ॥ आनन्दो मे गुनः पातुः पुमादपातु
ये कतस्यद किं हो पातु सिद्धी ॥ वामविद्याधरावि
त ॥ प्राप्ति कुरुमी नित्यं विनाम नि विनायक ॥

आनन्द्यावकुरु ह्युमः द कि हास्या मना सुत ॥ ने
ली सर्व विद्ये ॥ पातु नित्या गहा ॥ वन ॥ वती च्या
सिद्धिदः पातुः वायव्या गजक ह्युक्त ॥ को वेप्या स
र्व सिद्धी ॥ ॐ ॥ गन्धर्वा मी गनन्दन ॥ उद्ध विनाय
कः पातुः अक्षय मखकवाहन ॥ नाग पातु गजक

७४ सुध्रमाह नव नित । दाग्न कं गालय कवः सुवे
त ४ वाउम सिदा ॥ ग्रहस्त दिग्गभ रेह्य ४ वाउ निल
गजान्न ४ । सुव नज सुभावावः दू द्विद्वान्न सुगिंद
या ॥ धर्म च उ विधितु म्नी । सुजो की ति कूल कव ४
धर्म धर्म ग ह दामा । त्यु वोगा सुखी सु ॥ न के

दन्ता वउ ५१ मानु सव त स क मा त म ज ४ ॥ यगु व मि ४
समा द्विमानु (जे प्री यगु क न न्य न ४ ॥ नू ति द क व व
देवी प्र ४ वा ॥ न्नि य त ४ सु वि ४ ॥ न क काल द्विकाल
वा । प्रिकालम्वा प्रिल किमानु ॥ न त स प्र स र कि
वि नू प्रि प्र स के सु द सु र । सुव या प वि नि मूक्ता ।

जायते विमानवः॥ प्रयका मयते नित्यं सुसुतं
हं मनो नथी। ततमवति स कलं। पद्मा सा न्ना ग्रह
ज मः॥ मोहनं सुमहना कथं। नानहं। धाठना वरु।
मानदीदकजायने। नाप्रकार्यो विरागद्वह।॥ सर्ववि
द्युहनीददः॥ हवीजानिवा नदी॥ सर्वसुदुःखक

निस्रवापदि विनाहन। धर्तदकवर्चदेवी। प्राजव
मनुमले म। नवाधुनं च विद्यावि। कदाचिदपि कुरु
वि॥ हर्जयगुलि रिवायः। द्वापतेदविधानने॥
वादाजिरवाथ वाकः॥ पूजप्रियागदा धिर्वी॥ प्र
का कनस्यमनुस्य। कवर्चदविद्वहं॥ धाधमप्यम

हं गानि नृगविष्टे नवा प्रते ॥ गद्यगुह्यदयनाम
कवचं सर्वसिद्धिदं ॥ यत्तु द्वात्रिंशत्तयायि तस्य सिद्धि
कर्मणिता ॥ जपका प्रमहं गानि कवचं दविदूर्ध्वं
दातव्यं त्रिक्रियाय कवचं ससूत्रं ॥ १० ॥ इति
श्रीरघुनाथसुंदरी नमो नोऽकिं न सुखादगद्यग

द्यदयनामकवचं सर्वसिद्धिदं ॥ १० ॥ श्री नमोऽय न देवताय
श्रीदेवताय ॥ देवदर्वं महादेवं त्रिकानां प्रीतिवर्द्धनी
सुविता प्रमहं देवता ॥ कवचं दविदूर्ध्वं ॥ जपका
श्रीवर्नं गुह्यं साधकाय सिद्धिदी ॥ कवचं स
जपि देवी दक्षिणमूर्ति नवायं ॥ द्वादशवकिं ॥

समृद्धि कंद विनिग्रह सूदनी। धर्मार्थ काममाश्रानो
विनिमार्ग निगुण धाने। **अथ ग्रामहायिग्रसूद-**
नीकवचमावकिंवा मरु के सविह्वय। किं कंद
ग्रनसूद देवताने की वीजने **मुक्ति** किं कंद **मुक्ति** का
तकै मम धर्मार्थ काममाश्रानो धने विनिमार्ग **की** ज०

॥ वाग्जुव ४ कामनाजश्च शक्ति ४ वीज महनी। **नंद** का
वाग्जुव ४ वागार्थमा **का** कामनाजश्च **था** ददि **॥**
मों ४ मुक्ति शक्ति वीज सदा **वा** वाहु ना हो गुग्गुलुव वाद
जाथा **मुक्ति** मों ४ वदमपाहु वाताना सर्व सिद्धय
हैं हैं हैं एकतनी **मुक्ति** वाहु हे नवीक ददग ॥ ४ ॥ सु

न्दनीनाहिदङ्गायाः। स्त्रीषकासकलात्मजा॥ इमा
सुधावन्तनाथः। महाप्रियूनसुन्दरी॥ सलानेसुल
गमवाहुः। लङ्गमां कशदेगनः। लङ्गमदमाहुद्वेपे।
उदनेलङ्गसुवीद्या। लङ्गमातानाहिदङ्गा। तिल
वाहुमनालवाः॥ गुणवाहुमहादवीनाजनाधोऽध

नीङ्गावा। वेतन्यरूपिनीवाहुः। वादमाजगदमिका॥
नानाप्रदासुर्वगमः। पूर्वकार्यगुलंकनी। पुष्पाग
वाहुमां पूर्वपदिकिछावेक्षणीगथा॥ वाञ्छिमपाहु
वानाही। उलनेउसहस्रनी। अङ्गम्यापाहुकोमा
नीनलक्ष्मिद्वीपनेमथ॥ वायुव्याम्याहुचाम्दुहा

ॐ ह्रीं ह्रीं वायुं ह्रीं गकं । जलं वायुं न ह्रीं ममा । य. थि
यां सर्वं मं ॥ १ ॥ आकाशं वायुं वनं दः । सर्वं गुरुं वने
श्वनी । ॐ देउक व रं देवाः । देवाः श्रम विदू रं ले । व
॥ १ ॥ वायुं त ॥ १ ॥ मस्तु मः ॥ ३ ॥ चित ॥ १ ॥ मती न ह्रीं नाध्या
व्याध मस्तु मः । न ह्रीं मं चक्र विहृ वं ॥ न च मानी ह

पं गस्तु । या त कानां ह्रीं मं ॥ १ ॥ न दानि दुं व ह्रीं गकं
ह्रीं ह्रीं मस्तु मस्तु मस्तु ॥ १ ॥ गकं ह्रीं वपु रं देवाः । मस्तु म
ह्रीं वदामस्तु । ॐ देक व मस्तु मस्तु । आ विद्यां मस्तु मस्तु
मस्तु ॥ १ ॥ मस्तु मस्तु मस्तु मस्तु । या य मस्तु मस्तु मस्तु
मस्तु । ॐ ह्रीं मस्तु मस्तु ॥ १ ॥ मस्तु मस्तु मस्तु मस्तु । कवचं म

मायक ३॥ ॥ ॐ नमः श्रीवनदेवताये ॥ ॥ श्री का
दिक उवाच ॥ कवचवनदेवास्तु ॥ ॐ मित्र
मित्रहर्तृ ॥ हविताप्रत्नयापूर्वः सर्वसिद्धिप्र
दायकः ॥ तद्दिनानाधिकं शक्तिः जयमानादिक
मैत्रि ॥ तत्वेव कथितं प्रह्लादः समातदमप्रवृत्तः ॥

॥ सदाजिह्व उवाच ॥ ॥ ॐ कस्तमहाप्राह्म नह
स्यातिनह स्यकः ॥ उनीयकवचं दिव्यः सर्वमनुम
मा ॥ ॐ ॥ पूज्यस्यापिनवातव्यः नदप्रवर्तनजिह्वया
॥ ॐ ॥ पूज्यकवचं वातपूर्वः कवचसम्पदीनया ॥ ॐ ॥
न तस्य प्रवर्तनामिः स विरुद्धप्रवर्तनः ॥ उनीयक

वचं मया सः प्र विहेन व उच्यते ॥ निवृत्तुन्या देवता
सः देवि प्रियं न सुन्दरी । सर्वोली कस्तुतं सिद्धे वि
निष्ठा गण्युकी हित ४॥ श्री नमो गजयोगे ॥ श्री न
वदी प्रेम नोदनी । नत सिद्धा सन दिव्यं गजदेवी वि
विन्दते ॥ जवा वन्धूक रैको गी । गिन गजक च उन्दु जी ।

पाश की ग कल जेवः न व वा य ग ना विता ॥ ध्याते
है रान ले दी न ४ क व र वा ल नाम् र्व । मूर्द्धि **गौ** जय
की मया पाउ निर्य विहृतय ॥ लो वने **जा** म गला
मः काती **कौ** क र्णू प **क** । **क** का न स हिता ४ पाउ
घाती म ह ड का लिका ॥ **क** र्व क या ती नी पाउ **कौ**

कानसहितं ॥ कानसहितं ॥ दूर्गमां न
कथं सदा ॥ **का** कानसहितं ॥ वाकु निवा **का** द
प्रचम ॥ कानसहितं ॥ ग्री नित्यं या ॥ ययु शच
मां ॥ ८ प्रक ॥ शीज ० २३ ॥ नैना से व ॥ श्री गथा ॥
तको मानी द ॥ ६ ॥ वेकू वी **का** वसं धिष ॥ ह

कानसहितं ॥ नानदी व ॥ अके ॥ एके लोक
दि ॥ ६ ॥ कजान् निव इति का ॥ हकानसहितं ॥
३ ॥ महा ल ॥ ३ ॥ नैद्य ॥ ६ ॥ कानसहितं ॥ या
दया जगद मिता ॥ **का** कानसहितं ॥ या ॥
मिन्दु व ॥ ३ ॥ कानसहितं ॥ ३ ॥ प्रचन्द व

मानसकवच

सिद्धालकवच

सिद्धालय

ASHA ARCHIVES

1.320

ASHA ARCHIVES

दि कोचक ॥ कको न स हिता या उ व छा अद कि उ
व मा ॥ लका न स हिता या उ व छा ना मि का न रु से
का का न च न मा या प्रा न वी या म उ स व दा ॥
का न सर्व दा या उ व छा व गी वा म को ल **का** का न स
हिता या उ व नू या स थ ह न **का** का न हि थ मा या

उ दि हा ज प्र मि व हि का ॥ **का** का न स हिता म ब्रा
या उ मा स ग र हि का ॥ **ना** ना म उ सर्व दा म प्रा न उ
दु या उ म हा द नी ॥ या उ सर्व श्व नी निर्ण **बा** बा (म स
सिता च मा ॥ महा विद्या च मा या उ श्री म दि पु न स
दे नी ॥ अरु द्य र द्य क व र पू म न्ना क न स म धि

भा। यो। जि। नी। ब। क्र। सु। हि। तं। तव। वी। त्या। म्। की। लि। तं। ॥ वृ
५। ~~सु। हि। तं। तव। वी। त्या। म्। की। लि। तं। ॥ वृ~~ जि। म्। प्रा। य। क्थे। त्या। दा। तव। प्र। न। क। दा। व
न। ॥ ॐ। दं। शि। व्। न। सु। न्द। म्। प्रा। दु। री। प्र। कर्षं। शु। ही। ॥ जा। द
नी। म्। प्र। य। ले। नः। सन्तो। द्वा। न। कु। म्। म्। प्रा। क। थि। तं। स। वं। या
य। ध्मं। स। द्वा। त्रि। क्क। नि। वा। न। तं। ॥ स। वं। का। म्। प्र। दं। वे। वः। सु। खं

सु। म्। त्। य। व। द्धं। कं। क। व। च। स्य। प्र। ल। वं। नः। शु। ला। अ। वि
ज। यी। हं। वे। तं। ॥ न। दी। दि। ता। य। दा। तं। म्। ॥ शु। द्वा। वि। न। हि। ता
मं। नं। न। दे। यं। म्। स्य। कं। म्। प्रा। वि। कं। त्। द्वा। मं। तं। ये। वं। च॥
॥ नो। म्। प्र। शु। न्। हं। का। म्। दं। मं। जि। व्वा। म्। प्र। सो। धं। कै। ज
ह्मं। त्वां। क। वं। चं। शि। दं। प्रा। उ। वं। त्वां। न। दे। वं। म्। ॥ ॥ जे। यं। स। धा

विष्णुर्धनः प्रथमदण्डप्रथमनिधाय। ब्रह्मा विष्णुर्धनः
मोक्षः सदा सर्वगः समधिनी॥ शुभादित्यं गृहीतव्यं
ॐ देवकवचमूलम्। सत्रवशुनरुखांस्याः कवचरू
सूक्त्युक्तं॥ निष्ठाः प्रजयकासवाः प्रहृष्टं प्रभुमनु
न॥ ४॥ विष्णुर्धनः प्रथमदण्डप्रथमनिधाय। ब्रह्मा विष्णुर्धनः
मोक्षः सदा सर्वगः समधिनी॥ शुभादित्यं गृहीतव्यं
ॐ देवकवचमूलम्। सत्रवशुनरुखांस्याः कवचरू
सूक्त्युक्तं॥ निष्ठाः प्रजयकासवाः प्रहृष्टं प्रभुमनु
न॥ ४॥

सुधाहृदयगीतस्य वसुधैव कुटुम्बकम् । जगत्त्रय
 धमलवैतनस्य नाशकाम्यो विद्यानक्षत्र ॥ देवीवन्दने
 लवैवार्कः । त्वयैव धाममयूतम् ॥ इति गीतं चित्तं सर्वं
 संगुह्य हृदयनकुम्भम् । निगुह्य हृदयनमन्त्रं उवाच
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति गीता श्रुत्वा मया हृदयकृमानममम् ॥

दमहाय प्रक विव संद र्द ॥ २० ॥ नित्य
येन म ४ ॥ ५ ॥ दयु नाव ॥ ॥ त्रिपूना त्रिपूना ॥
सुन्दरी पून वसि नी ॥ ५ ॥ साहिनी वसि द्वासा ॥ महा त्रि
पून सुन्दरी ॥ प्रकण श्या व धा ॥ ३ ॥ का ॥ न ॥ ५ ॥ गुफा
न ॥ ५ ॥ वना ॥ सुप्रदाया कृता कीला ॥ नहस्यातिन

कला । दूर्गा । कोचनम् । वत्सा । कामगामाहिनी ।
 ॥ विमला । अनूना देवी । अपनी कल हे नवी । सिद्धि
 नीतथा कोली । वा । जग । सर्व कामिनी ॥ सिद्धि
 तथा वा । दूर्गा । महिषमर्दिनी । सुप्रावती । गुरी
 नीव । मात । जी । सु । सुन्दरी ॥ महाकाली । महा । अ । वि

[illegible]

अटश्वनीमहाविद्याः कलाता सुवले नवा । उवास
 कोन्महादेवः ॥ १८ ॥ वत्समना श्वर्गः । मन्त्रद्वय
 नश्चः मन्त्रेथ सुदनीतनः । लोया म्द्रा म्निर्नदी
 गक्रः ॥ सुन्दः ॥ जिव सुथा ॥ १९ ॥ धल द्वा नृक ल्ये वः यव
 मी यनेकी लिता । द्वा । साव्यास सूर्यासः वः जिव

१५ यत्रागत्र ॥ उच्चैः श्रुत्वा द्विप्रमल्ले कं ने सता वन्
 मग ॥ काय विष्कू ॥ गत ॥ हेनवा ज द्यपत
 ॥ अनिरुडा लेन दाला दक्षिण मूर्द्धि न वचा व
 टक ॥ कल यल्ले व का द्या ज ग म न स्रवती ॥ अत्रि
 ॥ १५ ॥ पुमल ॥ उन्मल कल लेन व ॥ द्विगुवा

लाश हन मां न्य को ज्ञ प्र न व च ॥ शु क द व प्र ह
ला द श ना मो ना व द न व च । का श्र व ॥ नी स क
लो व ॥ ज म द गि र्त्त गु द थ ॥ क ह स्य ति प्रे द श
४१ ॥ द ह ग यो प्र धि कि न ॥ प्र ज ना ली म स न श ॥ ३
श वा यो क वा क ति ॥ ४ ॥ द यो ध न स्य क न्ना ॥ गा ता

र न्द्र किं ही त थ ॥ ह ल्य ल मा डो व दी व ॥ उ र्वे ग
व रि सा न्द्र मा ॥ व र्ष द न्ना म हा व ॥ वा द क ल श
म र्त्त ॥ ४ ॥ कै ला ग ॥ क न सि न्धु ॥ उ द ध हि म वा
रु थ ॥ ना न द श म हा वी न ॥ क ति ता व द्म सा ध का
म हा वि द्या प्र वा द न ॥ स स क म स म वि ता ॥ न त र्वा व

सनामानि. नि. त्या. नि. त्या. म. स. वि. ता. । वा. त. का. त. स.
वि. तु. त्वा. म. ४. व. १०. त्य. म. ता. त. म. न. ४. ॥ य. जा. मा. म. भा. गु. वि.
तु. त्वा. प्र. सी. ता. मि. क. ल. वि. य. ॥ अ. ३. वि. वी. नि. ता. त.
म. मा. न. के. स. क. ला. न. क. ॥ नि. त्य. पू. जा. र. त. त. म. द.
दा. ति. व. न. मि. पि. ता. । च. क. स. के. व. क. न. स. ॥ ३. ॥

के. त. के. न. ॥ नाम. स. के. त. क. के. व. म. न. स. के. व.
के. न. ॥ स. म. या. चा. न. स. के. त. म. स. ला. वा. चा. प्र. व. ह.
॥ ज. य. पू. जा. र्च. ना. दा. मो. ज. ति. वा. ना. य. क. ल्प. त. ।
त. स्म. । प्र. व. १०. त्वा. ३. सा. र्ज. ता. मा. न. य. ५. व. ॥ २४. ॥ ००
मि. ३. ॥ त. न. द. ३. ॥ म. नो. म. हा. त. न. नि. त्या. स. व. न. ज. म.

२७॥ प्रियचन्द प्रेममध॥ नृजनेत सिंदूर सुना देवी
चउर्वा दू प्रि सायनी॥ वक्रव कुं ह लेखे मन्ना ल कान
ह विना॥ पूरु के ज प्र मा ला र व न दा ह ह स्त का
ह न ल कान सुर्वा जी॥ नृड ज कि न मो लु ॥ द क व
म हा देवी॥ नृक व कु प्रि सायनी॥ नृक व धु म हा

म २
नृज॥ चउर्वा दू विर विना॥ ना ग वा म ज प्र मा
ला व न दा ह य ह के न व धा त्वा हा देवी चउर्वा
कि न म्मा रुत॥ वा म धे व म हा देवी॥ नृक व कु प्रि सा
य नी॥ नृक व धु चउर्वा दू हा या ल कान ह विना॥
पूरु के ज प्र मा ला र व न दा ह य ह स्त के म ल मि

हृत् हनः श्रेयः महान्नयः अहिता ॥ आमत विष्णुः

किंश्च सर्वकामसुखदं ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यन्मन्त्रोऽयं सर्वकामसुखदः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

लोमसः ॥ श्री विद्या तन्त्रा मन्त्रा ॥ श्री विद्या वल्लभाय नमः ॥

हृत् सर्वं हं श्री गुरुवचनं दत्तं नमः ॥ ब्रह्म ज्ञानं नमः ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गुरुदेवाय नमः ॥ गुरुदेवाय नमः ॥ गुरुदेवाय नमः ॥

यन्मन्त्रोऽयं सर्वकामसुखदः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

निर्माणं ॥ श्री गुरुदेवाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

विष्णुहवः॥ इयः॥ मूलमनुनः प्रिया कुलिङ्गाम् ॥ नैकां सौगम
लाप्रियं हृदयेन प्रिया ह्या कसनीयेन म॥ नैकां सौगम
येन म॥ वन्दनं तमः सिन्दूरनमः अङ्गितनमः अङ्गितनमः
वृष्यनमः प्रिया कुलिङ्गाम् ॥ लङ्का मनुनं ह्याय ॥ यनिवन्त
नैकां सौगम नैकां सौगम नैकां सौगम नैकां सौगम नैकां सौगम
नैकां सौगम नैकां सौगम नैकां सौगम नैकां सौगम नैकां सौगम
नैकां सौगम नैकां सौगम नैकां सौगम नैकां सौगम नैकां सौगम
नैकां सौगम नैकां सौगम नैकां सौगम नैकां सौगम नैकां सौगम

